भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह 07 से 12जुलाई 2015

यह राज्यों के कृषि विश्व विध्यालय और उनके प्रतिनिधियों द्वारा भेजी गयी सूचनायों के आधार पर आधारित है।

मौसम की जानकारी:

राज्य / जिले							साप्ताहिक सलाह
	7	8	9	10	11	12	
पंजाब							अगले 3 दिनों के दौरान कई स्थानों पर मध्यम से भारी बारिश गरज के साथ छीटों की भविष्यवाणी कर रहे हैं इस समय किसान सिचाई न करें। कपास जल जमाव के लिए अधिक सवेदनशील फसल है विशेष कर प्रारंभिक विकास के दौरान। इसलिए, कपास के खेतों से अतिरिक्त पानी बाहर निकालें। भारी बारिश के पूर्वानुमान को देखते हुये किसी भी रसायन का स्प्रे से न करें। बादल और उच्च तापमान के कारण फसल में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट (पत्ता तुषार) दिखाई दे सकते हैं। फ़होपर, वाईटफ्लाई और कीटों प्रकोप फसल शिखर वनस्पति चरण में है, जहां कुछ जिलों में वृद्धि की संभावना है। पेरविल्ट बठिंडा जिले के कुछ क्षेत्रों में देखा गया है। हरियाणा, के कुछ हिस्सों में वाईटफ्लाई (6-38 / 3 पत्ते) और कीटों (8-27 / 3 पत्ते) पाया गया। पत्ता कर्ल वायरस कुछ क्षेत्रों में देखा गया था। पहली सिंचाई के बाद पौधो पर जड़ सड़न की समस्या कुछ स्थानों पर देखा गया था । जब लक्षण दिखाई दे उपचारात्मक या रोगनिरोधी उपाय किए जा सकते हैं।
भटिंडा	4	21	23	23	0	5	
फिरोजपुर	11	21	25	29	0	5	
मुकतसर	4	15	25	29	0	3	
मानसा	5	17	17	4	0	0	
हरियाणा							
सिरसा	8	0	8	0	0	0	
हिसार	6	8	6	10	0	0	
फ़तेहाबाद	15	16	12	8	0	0	
राजस्थान							अगले 4 दिनों हल्के बारिश के साथ बादल छाए रहेंगे। किसानों को मिट्टी की नमी को संरक्षित करने के लिए निदाई गुड़ाई कार्यों के लिए जाने के लिए सलाह दी जाती है।प्रारंभिक लक्षणों के आधार पर रूट सड़ां न और पैराविल्त (parawilt) केक्षेत्र विशेष के लिए विशिष्ट उपचारात्मक उपाय किया जा सकता है। पाइरेथ्रोइड या फिप्रोनिल छिड़काव बिलकुल न करें , इन कीटनाशकों से सफेद मक्खी (whitefly) समस्या बढ़ जाएगा। नीम का तेल स्प्रे को प्राथमिकता दें ।
हनुमानगढ़	2	1	4	3	2	4	
श्रीगंगानगर	2	1	4	3	2	3	
बांसवाड़ा	1	2	4	5	3	0	
उड़ीसा							सक्रिय मानसून को देखते हुए कपास की बुआई जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। लाल चना या फली फसलों को रजोबियम प्रजातियों के साथ उपचार के बाद अंतर फसल के रूप में लगाया जाना चाहिए। अरंडी, गेंदा और मक्का जैसे ट्रैप फसलों को सीमा पर पंक्तियों में लगाया जाना चाहिए। खरपतवार के लिए स्प्रे करना चाहिए।
कोरापुट	1	0	4	5	15	13	
कालाहांडी	0	3	3	5	13	11	
बोलांगीर	0	0	3	4	7	7	
गुजरात							अगले 6-7 दिनों के लिए कमजोर वर्षा का पूर्वानुमान हैं। वर्षा आधारित क्षेत्रों में कपास की बुआई न करें। जहाँ जल स्रोतों से उपलब्ध हैं वहाँ युवा पौधों में सिचाई करें। जहाँ भी कीटों और सफेद मक्खी के प्रकोप की संभावनाएं हों वहाँ विशेष रूप से यूरिया की छिड़काव कर सकते है , जल्दी बुआई किए गए फसल नीम तेल आधारित स्प्रे की सिफारिश की जाता है।
अमरेली	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	2	3	3	2	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	2	0	0	0	0	0	
भरूच	0	2	3	3	2	0	
सबरकांठा	0	2	3	3	2	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	2	3	3	2	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0		
मध्य प्रदेश							इस सप्ताह रुक रुक कर बारिश की भविष्यवाणी कर रहे हैं। वर्षा आधारित खेतों

खरगोन	0	0	2	0	0	0	में अब बुआई न करें। वर्षा सिंचित क्षेत्रों में जुलाई-अगस्त में कमजोर मानसून की भविष्यवाणी होने के कारण जुलाई के 2-3rd सप्ताह में बोई फसल नमी तनाव की स्थिति होगी। अतः नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सिफारिश की है।
धार	0	3	8	0	0	0	
खंडवा	0	0	3	0	0	7	
महाराष्ट्र							सप्ताह के अंत तक मध्यम वर्षा होने की उम्मीद है। मानसून के पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के बाद एक सूखे की अवधि है अतः नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सिफारिश की है। फसल सिंचित क्षेत्रों में वनस्पति से कालिया लगने की चरण में है वर्षा आधारित क्षेत्रों में वनस्पति चरण है इंटर कल्चर तथा खरपतवार प्रबंधन तुरंत करें उसके बाद उर्वरकों का छिड़काव किया जाना चाहिए। किसी भी कीटनाशक स्प्रे न करें।
नागपुर	0	0	0	2	2	0	
वर्धा	0	0	0	0	1	1	
चंद्रपुर	0	0	0	0	2	2	
यवतमाल	0	0	0	0	0	1	
अमरावती	0	0	0	2	0	1	
अकोला	0	0	0	2	0	0	
बुलढाणा	0	0	0	0	2	0	पूर्वानुमान के अनुसार मानसून अगले दो सप्ताह कमजोर है यदि मिट्टी में पर्याप्त नमी उपलब्ध नहीं है तो खाद नहीं डाला जाना चाहिए। फसल और घास के बीच प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए खेतों में होइग (Hoeing) और निराई किया जाना चाहिए। यह कि जहां कहीं भी संभव है सुर क्षित सिंचाई (3cm गहराई) किया जाना चाहिए है प्री मानसून के कारण पौधे का पैच में लाल होना और कमजोर पड़ने से कपास फसल में प्रभावित हो सकता है। सक्रमित पौधे हटा दिया जाना चाहिए और अंतर को भरने के लिए रोपण करना चाहिए। वर्षा आधारित फसल नमी तनाव का सामना करना पड़ने की संभावना है। इसलिए नमी संरक्षण किया जाना चाहिए।
परभनी	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	
वासिम	3	0	0	0	0	2	
धुले	0	0	0	4	3	0	
जलगांव	0	0	0	4	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	3	3	0	
तेलंगाना							वारंगल, करीमनगर और खम्मम में सप्ताह के अंत तक कम बारिश की संभावना हैं 12-18 जुलाई से अगले सप्ताह तेलंगाना भर में शुष्क रहेगा है। बाकी जिलों में बदली के साथ छिटपुट बारिश की भविष्यवाणी की है। सिंचित क्षेत्रों में बुवाई किया जाना चाहिए। जून के 2-3rd सप्ताह में बोया गए कपास में सिंचाई की जरूरत होगी । नमी संरक्षण के उपायों किया जाए। वर्षा आधारित खेतों में इस सप्ताह के बाद बोये फसल के अंकुर चरण में नमी तनाव का सामना करने की अधिक संभावना है। फसल में कीटों और सफेद मक्खी whiteflies का प्रकोप देखा गया है, किसी भी रासायनिक स्प्रे से बचने की सलाह दी जाती है। जल्दी बुआई की फसल पर पत्ती हॉपर और whiteflies देखा जाता है तो नीम का तेल आधारित स्प्रे सिफारिश कर रहे हैं।
आदिलाबाद	0	0	0	0	4	2	
वारंगल	0	0	5	6	4	5	
खम्मन	0	0	4	6	5	4	
करीमनगर	0	0	5	8	8	6	
नालगोंडा	0	0	0	2	4	2	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	0	4	6	4	0	
प्रकासम	0	0	0	4	6	2	
कर्नाटक							शूट वीविल (घुन) का प्रकोप् कुछ इलाकों में देखा गया है। वीविल्स सुबह के दौरान एकत्र कर नष्ट किया जाए। देसी कपास की किस्मों ज्वाधर, डीडीएचसी-11, और आरएएचएस-14 (Jayadhar, DDHC-11 और RAHS-14) की बुवाई जुलाई के अंत तक जारी रखा जा सकता है। देसी कपास जून के पहले पखवाड़े के दौरान बोया जाए यदि बुनियादी खुराक लागू नहीं किया गया है तो 40:25:25 एनपीके किलो / हेक्टेयर के दर से खाद खेत में डालने की सिफ़ारिश की जाती है
धारवाड़	0	3	3	7	6	5	
हवेरी	0	2	4	5	6	6	
मैसूर	0	1	3	3	6	5	
तमिलनाडु							सप्ताहांत के दौरान आंशिक बादल और बारिश की संभावना के साथ 12-18 th जुलाई से सूखे सप्ताह की भविष्यवाणी की गई है, गूलर (Bol) गठन की अवस्था के दौरान फसल किसी भी नमी तनाव का सामना नहीं करना पड़े यह सुनिश्चित करने के लिए जहां भी संभव फसल की सिंचाई करना चाहिए।
पेरमबेलूर	0	0	0	2	2	2	
सलेम	0	0	0	3	3	3	
त्रिची	0	0	0	3	1	2	
विरुदुनगर	0	0	0	0	3	3	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सिफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा लिखित: इस सलाह का कोई हिस्सा किसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या किस अन्य साधन में किसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल किया जा सकताहै।)

इस संक्षिप्त नोटमेंप्रबंधन रणनीति की सिफारिशें सीआईसीआर किए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और विभिन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजेंसियों द्वारा विकसितपारिस्थिति के अनुरूपविकसित दिशा-निर्देशों के आधार पर किया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्वहोने वाले या संकर-बीटी-कपास किस्मों को वर्षा सिंचित क्षेत्रों में प्राथमिकता दिया जा सकताहै।
2. पहली बारिश(80 मिमी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा सिंचित क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा सिंचित क्षेत्रों में विशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण विधि में लकीरें (रिजेज़) पर बुआईसबसेज्यादा किया जाता है।
4. वर्षा सिंचित क्षेत्रों में जहां सिचाई सुविधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90X30 सेमी दूरी पर अधिक चौड़ाई(व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
5. गैर बीटी किस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी),एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवीअकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंजलि (एलआरके516)जल्दी परिपक्वहोने वाली किस्में हैं यदि इन किस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60x10 (फुलेधन्वन्तरीके लिए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण किया जाता हैतो सूखा तनाव और बोलवर्मके प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की किस्मों की दो पंक्तियो के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारितलोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जा सकता है।
7. अंतर फसल(इंटर क्रोपिंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज कोब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकमसे उपचरित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की(2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मिली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लिए सहायक होगा और ये रिफ़्यूजिया **(refugia)**के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिशके बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयरकी दर से खेतो में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फ़िक्सेशन) के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचितअभिव्यक्ति सुनिश्चित करने के लिए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लिए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधनक्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचितअभिव्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लिए **$MgSO_4$**2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। विल्ट के प्रारंभिक चरण में पौधों की रिकवरी के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइडका छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से तने के आस पास की मिट्टी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लिए मददगार पाया गया है।
12. पत्ता लाल रोग का निवारण:90 दिन के फसल मे 2% यूरिया,0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतरालमें छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. कलियों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लिए फिनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मिला कर स्प्रेकरें।

कीटोंएवं रस चूसक कीटों काप्रबंधन:

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी किस्मों/संकरोंका चयन करें। बीटी संकर किस्में कीट एवं रस चूसक कीटप्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों केछिड़कावकी आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शिकारी कीटों (प्रिडेटर) की वृद्धि के प्रोत्साहन के लिएलगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लोफ्रिड 8 ग्राम, विटावेक्स या थिरम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (सकिंग पेस्ट) और रोगों के खिलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील किस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकोंका उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मिली बग संक्रमित पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम विघटनकारी कीट प्रबंधन के लिए नीम से तैयारकीटनाशक और जैविक नियंत्रण विकल्पका उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पिंक बोलवर्म) की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रेपका उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मिरीड बग, मिली बग और अन्य चूसक कीटों (सकिंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लिए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेड़ाक्लोफ्रिड डाइमेथोयेट या एसिफेट 30-40 डीएएस और 50-60डीएएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लिए करें।

ये ना करें:

10. कपासमेंपर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभाविक जैविक नियंत्रण के लिए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग नाकरें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबालिक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और सेमिलूपर के लिए कीटनाशक का छिडकाव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरासितएड की लिए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेंटेल्स और साइसीरोपा फार्मोसा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइड कीटनाशकों का उपयोग करने से बचेंजैसे कि एसेटामीप्रिड), ईमिडाक्लोप्रिड क्लोथिएडिन औरथाईमेथोजेम,चूंकि संकर कपास के बीज इमेडाक्लोप्रिड से उपचरित होते हैं इसलिए कीटों मेंइनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न क रें। अत्यंत खतरनाक श्रेणी के कीटनाशकों जैसेकिफास्फेमिडोन मिथाइलपैराथिओन,फोरेट,मोनोक्रोटोफॉसडाईक्लोर्वोसकार्बोफुरानट्राईज़ोफासऔरमेटासाइस्टोस।
16. फिप्रोनिलऔर पाइरेथ्रोइड़सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई)के प्रकोप रोकने के लिए न करें।
17. कीटनाशक मिश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मिश्रण से पारिस्थितिकी प्रणालियों (इको- सिस्टम) बाधित होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले है जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चितिदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है – 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर ; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

1) स्पोडोप्टेरा लिटुरा: इसइल्लेकेअण्ड पुंजों कोहाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लिटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसिस वायरस) का 500 एलई/ हे. की दर से या नोवाल्यूरोन 10 ईसी का 200 मिली या थायोडिकार्ब (लार्विन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मिला कर प्रति एकड़ छिदकव करें।

2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिदकव करें।

3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंगें का प्रकोप: अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा. / हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें । मेढों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायीदे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/ जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिचाई करने परइसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडेजिम 1 ग्रा./ लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न:

साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइट्न 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी:

मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा:

स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

घांसें:क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफ़ोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासें:प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार:पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है।

जब खेत की मिट्टी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नेंशाकनाशीविशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है।खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजईलोफोपइथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम , फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल ,का प्रयोग कर सकतें हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के किए कृषि विश्वविधालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन:

कपास अतिरिक्त पानी के लिए बहुत संवेदनशील है।मध्य और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में अ धिक बारिश कारण के पानी का जमाव होने सेसमस्याग्रस्त किया जा सकता है।गहरी काली मिट्टी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभावित है।भारी वर्षा की स्थिति में खेतों से पानी निकासी के लिए भूमि के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों याअतिरिक्ततरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें।उन क्षेत्रों में जहां वर्षाअधिमानतः 700-900 मिमी हो वहां मिट्टी में बेहतर की नमी संरक्षणके लिएभूमि को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज़) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज़) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज़ और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्तजल के लिए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करतें है।

ड्रेनेज चैनलखेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए , जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं किया गया तो रिजेज़ और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लिए सिफारिश की है।यह मानना है कि रिजेज़ के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभावित नहीं करेगा क्योंकि रिजेज़ और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लिए उर्वरक छिदकव स्थगित किया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधापीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील योगिक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल मेंछिदकाव (फोलियर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मिलेगी।

साप्ताहिक मौसम सलाहकार रिपोर्ट समन्वय टीम	
वैज्ञानिक	**पता**
डॉ. के.आर.क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ.ए.एच.प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी.मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस.बी.सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूज़ा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थानकृषि विश्वविद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्व विद्यालय भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषिविश्वविद्यालय एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

नोट: यदि अधोलिखित जानकारी (जैसे: कीटनाशक , रसायन, क्षेत्र या किस मात्रा या संख्या) में दुविधा हो तो संका समाधान के लिए अंग्रेजी अंक से संका समाधान करें।

हिन्दी संसकरण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी
केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, पांजरी, वर्धा रोड, नागपुर-441108 (महाराष्ट्र)
दूरभाष-07103,275549, ईमेल: cicrnagpur@gmail.comवेबसाइट: www.cicr.org.in

कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह सं 5/2015 19 से 24 जून साप्ताहिक सलाह (3 मानक सप्ताह)

-- इति --